بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **02.02.2018** मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

अल्लाह ग़ाफ़िरुज़्ज़म्ब है, अर्थात पापों को क्षमा करने वाला है। अतः उसके आगे झुकते हुए गुनाहों की क्षमा मांगनी चाहिए।

इंसान को चाहिए कि वास्तविक रूप से, दिल ही दिल में माफ़ी मांगता रहे कि वे पाप और दोष जो मुझसे हुए हैं उनका दण्ड न भोगना पड़े तथा दिल ही दिल में हर समय ख़ुदा तआला से सहायता मांगता रहे कि भविष्य में नेक काम करने का सामर्थ्य प्रदान करे तथा पाप से बचाए।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित आयतें तिलावत फ़रमाई तथा उनका अनुवाद पेश फ़रमाया-

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

حٰمٓ ○ تَنۡزِیۡلُ الۡکِتٰبِ مِنَ اللّٰہِ الۡعَزِیۡزِ الۡعَلِیۡمِ ○ غَافِرِ الذَّنۡۢبِ وَقَابِلِ التَّوۡبِ شَدِیۡدِ الۡعِقَابِ ۙ ذِی الطَّوۡلِ ؕ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ہُوَ ؕ اِلَیۡہِ الۡمَصِیۡرُ ۔(سورہ المومن)

اَللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ہُوَ ۚ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ ۚ لَا تَاۡخُذُہٗ سِنَۃٌ وَّلَا نَوۡمٌ ؕ لَہٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ مَنۡ ذَا الَّذِیۡ یَشۡفَعُ عِنۡدَہٗۤ اِلَّا بِاِذۡنِہٖ ؕ یَعۡلَمُ مَا بَیۡنَ اَیۡدِیۡہِمۡ وَمَا خَلۡفَہُمۡ ۚ وَلَا یُحِیۡطُوۡنَ بِشَیۡءٍ مِّنۡ عِلۡمِہٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ کُرۡسِیُّہُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ ۚ وَلَا یَـُٔوۡدُہٗ حِفۡظُہُمَا ۚ وَہُوَ الۡعَلِیُّ الۡعَظِیۡمُ(سورہ البقرہ)

फ़रमाया- इन आयतों का अनुवाद है कि अल्लाह के नाम के साथ जो बड़ा रहम करने वाला, बिन मांगे देने वाला तथा बार बार रहम करने वाला है। हमीद है, मजीद है। इस किताब का उतारा जाना अल्लाह सम्पूर्ण प्रभुत्व वाले की ओर से है जो पापों को क्षमा करने वाला तथा तौबा को क़बूल करने वाला है। पकड़ में बड़ा कठोर और बड़ा प्रदान करने वाला तथा बड़ा उपकारी है। उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, उसी की ओर लौट कर जाना है। दूसरी आयत अलकर्सी है, जिसका अनुवाद है कि अल्लाह, उसके अतिरिक्त कोई अन्य उपास्य नहीं, सदैव जीवित रहने वाला तथा व्यापक है उसे न तो ऊँघ पकड़ती है न ही नींद, उसी के लिए है जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है। कौन है जो उसके समक्ष सिफ़ारिश कर सके किन्तु उसकी अनुमति से, वह जानता है जो कुछ उनके सामने है और जो उनके पीछे है तथा वे उसके ज्ञान को नहीं जान सकते किन्तु जितना वह चाहे। उसका राज्य आकाशों और धरती पर फैला है। इन दोनों की रक्षा उसे थकाती नहीं और वह बड़ी शान वाला तथा महिमा वाला है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इन आयतों में अल्लाह तआला की कुछ विशेषताओं का वर्णन किया गया है तथा उसकी महिमा एवं महानता बयान की गई है। इन आयतों के महत्त्व के विषय में हदीसों में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निर्देश मिलता है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ीयल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने प्रातः काल **'हामीम'** से लेकर **'इलैहिल मसीर'** तक पढ़ा तथा आयतुल कुर्सी भी पढ़ी तो इन दोनों के द्वारा सायँ काल तक उसकी रक्षा की जाएगी और जिसने ये दोनों शाम के समय पढ़ी तो इनके द्वारा सुबह तक उसकी रक्षा की जाएगी।

'हामीम' सूरः मोमिन की दूसरी आयत है। ये हरूफ़-ए-मुक़त्तआत हैं। ये जो फ़रमाया 'हामीम' ये हमीद और मजीद के शब्द हैं। हमीद का अर्थ है, वह जो प्रशंसा योग्य है तथा वास्तविक प्रशंसा उसी के लिए है अर्थात ख़ुदा तआला ही है जो प्रशंसा का अधिकारी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम्द के शब्द की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं कि स्पष्ट हो कि हम्द उस प्रशंसा को कहते हैं जो किसी प्रशंसनीय के अच्छे काम पर की जाए तथा ऐसे पुरस्कार देने वाले की प्रशंसा का नाम है जिसने अपने निश्चय से इनाम दिया हो तथा अपने सामर्थ्य के आधार पर उपकार किया हो तथा हम्द की वास्तविकता केवल उस अस्तित्व के लिए प्रमाणित होती है जो समस्त उपकारों एवं कृपाओं का स्रोत हो तथा अपने सामर्थ्य से किसी पर उपकार करे, न कि अनभिज्ञता के साथ अथवा किसी विवशता के

कारण। और फ़रमाया कि हम्द का यह अर्थ केवल ख़ुदाए ख़बीर व बसीर (सब कुछ जानने वाला तथा समझने वाला) की ज़ात में ही पाए जाते हैं और वही वास्तविक उपकारी है तथा अव्वल व आख़िर में सारे उपकार उसी की ओर से हैं तथा सारी प्रशंसाएँ उसी के लिए हैं, इस संसार में भी और उस संसार में भी तथा प्रत्येक प्रशंसा जो अन्य चीज़ों के विषय में की जाए उसका स्रोत भी वही है।

हम्द के शब्द में एक अन्य संकेत भी है और वह यह है कि अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाता है कि ऐ मेरे बन्दो, मेरी विशेषताओं के माध्यम से मुझे पहचानो तथा मेरे कमालात से मुझे पहचानो। जिन लोगों ने मुझे समस्त पूर्ण विशेषताओं का सूत्रधार विश्वास किया तथा उन्होंने जहाँ जो कमाल भी देखा तथा अपने विचारों की उच्चतम उड़ान तक उन्हें जो प्रताप भी दिखाई दिया, उन्होंने उसे मेरे ही माध्यम के साथ जोड़ा। अतः ये ऐसे लोग हैं जो मेरी निकटता की राहों पर चल रहे हैं, सत्य उनके साथ है तथा वे सफल होने वाले हैं। फ़रमाया- अतः अल्लाह तआला तुम्हें सुरक्षित रखे, उठो ख़ुदाए जुलजलाल की विशेषताओं की खोज में लग जाओ तथा विद्वानों और विचार करने वालों की भांति उनमें सोच विचार अर्थात गहरी नज़र से काम लो। क्यूँकि हम्द की विशेषता का आभास होने से ही शेष अन्य विशेषताओं का ज्ञान हो जाता है या हो सकता है। फ़रमाया- अच्छी तरह देख भाल करो तथा कमाल (अति उत्तम) की प्रत्येक बात पर गहरी नज़र डालो और इस संसार के प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष में तथा उसे उसी प्रकार तलाश करो जैसे एक स्वार्थी इंसान बड़ी रूचि से अपनी अभिलाषाओं की खोज में लगा रहता है। फ़रमाया- अतः जब तुम उस पूर्ण कमाल तक पहुंच जाओ तथा उसकी सुगन्ध पा लो तो मानो तुमने उसी को पा लिया और यह ऐसा भेद है जो केवल हिदायत के चाहने वालों पर ही खुलता है। अतः अल्लाह तआला के प्रशंसनीय होने का ज्ञान जो हमें प्राप्त होना चाहिए ताकि अल्लाह तआला की अन्य विशेषताओं को भी हम पहचान सकें।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वह मजीद है, उच्चतम है, बुज़ुर्गी वाला है। इसका अर्थ यह है कि बड़ा ही प्रशंसनीय है तथा महामान्य शान वाला है जिस के स्तर तक कोई नहीं पहुंच सकता, वह जिसकी कृपाओं का कोई अन्त नहीं, जो देता है और देता चला जाता है, कभी नहीं थकता। अतः आयत पढ़ते हुए अल्लाह तआला के उच्चतम होने का यह अर्थ सामने होना चाहिए। पहले हम्द का अर्थ फिर उसके मजीद होने का अर्थ।

फिर फ़रमाया कि वह अज़ीज़ है अर्थात समस्त शक्तियों का स्वामी है, सारी शक्तियों से अधिक शक्ति शाली है तथा वह परास्त होने में अक्षम है उसे परास्त करना सम्भव नहीं है। सारे सम्मान उसी के लिए हैं तथा उसकी महानता को गिना नहीं जा सकता, वह प्रत्येक वस्तु पर प्रभुत्व रखता है, उसके जैसा कोई हो ही नहीं सकता, यह है अज़ीज़ का अर्थ।

फिर फ़रमाया कि वह अलीम है अर्थात वह प्रत्येक चीज़ का ज्ञान रखने वाला है। उस बात का भी जो हो चुकी है तथा उस बात का भी जो भविष्य में होने वाली है। जिससे कोई चीज़ छुपी नहीं है, जिसका ज्ञान सम्पूर्ण रूप से प्रत्येक चीज़ पर वर्चस्व रखता है। अतः यह वह ख़ुदा है जिसने यह किताब उतारी अर्थात क़ुर्आन-ए-करीम तथा जिसने यह अन्तिम शरीअत उतारी है। उसने प्रत्येक युग की आवश्यकतानुसार ज्ञान को इसमें रख दिया है तथा अब हर प्रकार की सुरक्षा तथा ग़लबः उसके अनुसार वास्तविक रंग में अमल करने से होगा।

फिर फ़रमाया- वह ग़ाफ़िरुज़्ज़म्ब है, गुनाहों को क्षमा करने वाला है। अतः उसके आगे झुकते हुए पापों की क्षमा मांगनी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसको अनेक स्थानों पर स्पष्ट किया है कि अपने पापों की सदैव क्षमा मांगते रहना चाहिए। आपने एक बार फ़रमाया कि इंसान को जो प्रकाश प्रदान किया जाता है वह अस्थाई होता है अर्थात कोई भी दीन की अथवा आध्यात्मिकता की रौशनी प्रदान होती है तो वह अस्थाई होती है। उसे सदैव अपने साथ रखने के लिए इस्तिग़फ़ार की आवश्यकता होती है। फ़रमाया कि इस्तिग़फ़ार का यही अर्थ होता है कि मौजूदा नूर जो ख़ुदा तआला की ओर से प्रदान किया गया है वह सुरक्षित रहे तथा और अधिक मिले। इसकी प्राप्ति के लिए पाँच समय की नमाज़ भी है ताकि प्रतिदिन दिल खोल खोल कर ख़ुदा तआला से मांग लेवे। जिसमें विवेक है वह जानता है कि नमाज़ एक मेराज (उच्चतम स्तर) है तथा वह नमाज़ पढ़ने वाले की व्याकुलता तथा करुणा से भरी दुआ है जिसके द्वारा वह रोगों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। अर्थात रूहानी और जसमानी, हर प्रकार के रोगों के लिए दुआओं की आवश्यकता है और दुआओं में इस्तिग़फ़ार की आवश्यकता है और नमाज़ भी इसी का भाग है।

जब इन आयतों को पढ़ने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तो केवल पढ़ने से कुछ नहीं होगा अपितु कर्मों की अवस्था भी सुधारनी होगी, अपनी ओर ध्यान रखना होगा कि किस प्रकार हमने इस्तिग़फ़ार करना है किस प्रकार हमने अपनी नमाज़ों की रक्षा करनी है ताकि फिर हमारी भी रक्षा हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- इस्तिग़फ़ार का यही अर्थ है कि प्रत्यक्ष में कोई पाप न हो तथा पाप को प्रेरणा देने वाली शक्ति प्रकट न हो। इंसान को चाहिए कि वास्तविक रूप से दिल ही दिल में माफ़ी मांगता रहे कि वे पाप तथा दोष जो मेरे द्वारा हो चुके हैं उनका दंड न भोगना पड़े तथा भविष्य में दिल ही दिल में हर समय ख़ुदा तआला से सहायता मांगता रहे कि भविष्य में नेक कर्म करने का सामर्थ्य प्रदान करे तथा बुराईयों से बचाए, दिल में जोश पैदा होना चाहिए। ख़ुदा तक वही बात पहुंचती है जो दिल से निकलती है, अपनी भाषा में ही ख़ुदा तआला से बहुत दुआएँ मांगनी चाहिएँ, इससे दिल पर भी प्रभाव होता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः इस्तिग़फ़ार करने तथा उसके यथार्थ को समझने की आवश्यकता है। ज़िक्र-ओ-अज़कार (ईश स्तुति), दुआएँ उसी समय काम आती हैं जब साथ साथ कर्मों की हालत भी सुन्दर बनाने का प्रयास हो। लोग कहते हैं कि कोई छोटी सी दुआ बता दें, हम पढ़ते रहें। छोटी सी दुआएँ भी तभी लाभ देती हैं जब कर्त्तव्यों का निर्वाह भी हो रहा हो। नमाज़े भी समय पर अदा हो रही हों तथा पाबन्दी के साथ अदा हो रही हों और रूचि के साथ अदा हो रही हों तो तभी ज़िक्र भी काम आएँगे।

फिर अल्लाह तआला का गुण क़ाबिलुत्तौब है अर्थात वह तौबा क़बूल करने वाला है। तौबा का अर्थ है कि अपने पापों की क्षमा चाहते हुए अल्लाह तआला की ओर लौटना। अतः जब इंसान इस प्रतिज्ञा के साथ अल्लाह तआला के समक्ष उपस्थित हो कि मैं भविष्य में गुनाह नहीं करुंगा तथा सदैव पापों से बचने का प्रयास करता रहूँगा तो अल्लाह तआला इस भावना और निश्चय के साथ अपनी ओर आने वाले की क्षमा याचना को स्वीकार करता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- वह दिन कौनसा दिन है जो जुम्अः तथा ईदों से भी अच्छा तथा मुबारक दिन है? मैं तुम्हें बताता हूँ कि वह दिन इंसान की तौबा का दिन है इनसे उत्तम है तथा प्रत्येक ईद से बढ़कर है। क्यूँ? इस लिए कि उस दिन वह बुरे कर्मों का प्रपत्र जो इंसान को नरक के निकट करता जाता है तथा भीतर ही भीतर अल्लाह के प्रकोप के नीचे उसे ला रहा था, धो दिया जाता है तथा उसके पाप क्षमा कर दिए जाते हैं। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया- إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ

निःसन्देह अल्लाह तआला तौबा करने वालों को दोस्त रखता है तथा उन लोगों से जो पवित्रता चाहते हैं, प्यार करता है। इस आयत में न केवल यह पाया जाता है कि अल्लाह तआला तौबा करने वालों को अपना प्रेमी बना लेता है अपितु यह भी ज्ञात होता है कि वास्तविक तौबा के साथ वास्तविक पवित्रता तथा शुद्धता भी शर्त है। हर प्रकार की गन्दगी तथा बुराई से अलग होना अनिवार्य शर्त है अन्यथा केवल तौबा तथा केवल शब्दों को बार बार पढ़ने से तो कोई लाभ नहीं है। अतः जो दिन ऐसा मुबारक दिन हो कि इंसान अपने बुरे कर्मों से तौबा करके अल्लाह तआला के साथ सन्धि की सच्ची प्रतिज्ञा बाँध ले तथा उसके आदेशों का पालन करने के लिए अपना सिर झुका दे तो क्या सन्देह है कि वह इस प्रकोप से जो गुप्त रूप से उसके बुरे कर्मों के कारण तय्यार हो रहा था, बचाया जावेगा तथा इसी प्रकार से वह, वह चीज़ प्राप्त कर लेता है जिसकी मानो उसे आशा और प्रतीक्षा ही न रही थी।

अल्लाह तआला बड़ा ही दयावान और दयालु है, इंसान की भांति कठोर दिल का नहीं है जो एक पाप के बदले में कई पीढ़ियों तक पीछा नहीं छोड़ता और नष्ट करना चाहता है परन्तु वह रहीम करीम ख़ुदा सत्तर वर्षों के पापों को एक कलिमा से एक पल में क्षमा कर देता है। और फिर फ़रमाया वह ज़ित्तूल है अर्थात वह बड़ा दानी है, वह लाभ प्रदान करने की अति सीमा कर देता है। उसके जो वरदान हैं उनकी कोई सीमा नहीं है क्यूँकि उसके पास शक्ति है, वह सब कुछ प्रदान कर सकता है। उसके ख़ज़ाने असीमित हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरी इन विशेषताओं को याद रखो तो सदैव तुम कृपा प्राप्त करते रहोगे। उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है जो इतना सामर्थ्य रखता हो और हमने इस दुनिया में भी और मरने के पश्चात भी उसी की ओर जाना है। इस प्रकार जब यह आभास रहेगा कि अन्ततः लौटना ख़ुदा तआला की ही ओर है तो फिर नेकियाँ करने तथा उसके आदेशानुसार चलने की ओर ध्यान रहेगा और जब यह अवस्था हो तो फिर निःसन्देह ख़ुदा तआला सुरक्षा फ़रमाता है।

फिर आयत अलकुर्सी है। उसके विषय में हज़रत अबू हुरैरा बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि प्रत्येक वस्तु का एक कोहान (चोटी) होता है तथा क़ुर्आन-ए-करीम का कोहान सूरः बक़रः है तथा उसमें एक आयत ऐसी है जो क़ुर्आन-ए-करीम की सारी आयतों की सरदार है और वह आयतुल कुर्सी है। उसकी व्याख्या में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ अर्थात वही ख़ुदा है, उसके अतिरिक्त कोई नहीं। वही प्रत्येक जान की जान है तथा प्रत्येक अस्तित्व का सहारा है। इस आयत का शाब्दिक अर्थ यह है, जीवित वही ख़ुदा है तथा व्यापक वही ख़ुदा है। अतः जबकि वही एक जीवित है तथा वही एक व्यापक है तो इससे स्पष्ट होता है कि प्रत्येक व्यक्ति जो उसके अतिरिक्त जीवित दिखाई देता है, वह उसी के जीवन से जीवित है तथा प्रत्येक जो धरती अथवा आकाश में स्थापित है वह उसी के द्वारा स्थापित है। फिर और अधिक व्याख्या फ़रमाते हुए आपने फ़रमाया कि जानना चाहिए कि अल्लाह तआला के क़ुर्आन शरीफ़ ने दो नाम पेश किए हैं, अलहय्यु और अलक़य्यूम। अलह्यी का अर्थ है कि ख़ुदा जीवित है तथा दूसरों को जीवन प्रदान करने वाला है। अलक़य्यूम, स्वयं स्थापित है तथा दूसरों की स्थापना का वास्तविक कारण है। प्रत्येक वस्तु की प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष स्थापना तथा जीवन, इन्हीं दोनों विशेषताओं के कारण है। अतः ह्यी का शब्द चाहता है कि उसकी उपासना की जाए, इसका प्रमाण सूरः फ़ातिहः में **इय्याका नअबुदु** है और अलक़य्यूम चाहता है कि उससे सहारा मांगा जाए, इसको **इय्याका नस्तअीन** से अदा किया गया है।

फिर आयतुल कुर्सी में जो सिफ़ारिश का विषय बयान हुआ है, उसको बयान फ़रमाते हुए यह विचार बिन्दु आपने बयान फ़रमाया कि प्रत्येक इंसान जब दूसरे के लिए दुआ करता है तो यह भी एक प्रकार की सिफ़ारिश है तथा एक मोमिन की विशेषता होनी चाहिए जो सदैव वह करता रहे। क़ुर्आन शरीफ़ का आदेश है कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला के समक्ष अधिक झुका हुआ है वह अपने दुर्बल भाई के लिए दुआ करे कि उसको वह स्तर प्राप्त हो। यही सिफ़ारिश की वास्तविकता है, सो हम अपने भाईयों के लिए निःसन्देह दुआ करते हैं कि ख़ुदा उनको शक्ति प्रदान करे तथा उनकी कठिनाई दूर करे तथा यह एक सहानुभूति की शाखा है। फिर आपने फ़रमाया कि चूँकि सारे

इंसान एक शरीर की भांति हैं इस लिए ख़ुदा तआला ने हमें बार बार सिखलाया है कि यद्यपि सिफ़ारिश स्वीकार करना उसका काम है परन्तु तुम अपने भाईयों की सिफ़ारिश में अर्थात उनके लिए दुआ करने में लगे रहो तथा सिफ़ारिश से अर्थात सहानुभूति पूर्ण दुआ से न रुको कि तुम्हारा एक दूसरे पर अधिकार है। बड़ी सहानुभूति होनी चाहिए एक दूसरे के लिए। बल्कि फ़रमाया- बल्कि दीन के दो ही सम्पूर्ण भाग हैं, एक ख़ुदा से प्रेम करना और एक मानव जाति से इतना प्रेम करना कि उनकी कठिनाई को अपनी कठिनाई समझ लेना तथा उनके लिए दुआ करना जिसको दूसरे शब्दों में सिफ़ारिश कहते हैं। यह एक विचार बिन्दु है जिसे आयतुल कुर्सी पढ़ते समय हम सामने रखें तो मानव जाति के लिए सहानुभूति की भावनाएँ बढ़ेंगी। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब यह आयत पढ़ने की प्रेरणा दी हमें तो इसमें ईमान लाने वालों के परस्पर सहानुभूति की भावनाएँ स्थापित करने के लिए विशेष निर्देश है तथा मानव समाज के लिए सामान्य रूप से ध्यानाकर्षित किया है कि प्रत्येक के लिए सहानुभूति की भावना तुम्हारे दिल में होनी चाहिए।

वास्तव में शफ़ाअत का शब्द, शुफ़अः से लिया गया है तथा शुफ़अः जुफ़त को कहते हैं। इस प्रकार इंसान को उस समय शफ़ीअ कहा जाता है जबकि वह सम्पूर्ण सहानुभूति से दूसरे का जुफ़त होकर उसमें विलय हो जाता है तथा दूसरे के लिए ऐसी ही भलाई मांगता है जैसा कि अपने आप के लिए तथा याद रहे कि किसी व्यक्ति का दीन पूरा नहीं हो सकता जब तक शफ़ाअत के रंग में सहानुभूति उसमें पैदा न हो। आख़िरत का शफ़ीअ वह सिद्ध हो सकता है जिसने दुनिया में शफ़ाअत का कोई नमूना दिखलाया हो। जब हम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दृष्टि डालते हैं तो आपका शफ़ीअ होना बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देता है क्यूँकि आपकी शफ़ाअत का ही प्रभाव था कि आपने निर्धन सहाबा को सिंहासन पर बिठा दिया तथा आपकी शफ़ाअत का ही प्रभाव था कि वे लोग ऐसे एकेश्वरवादी हो गए जिनका उदाहरण किसी युग में नहीं मिलता और फिर आपकी शफ़ाअत का ही प्रभाव है कि अब तक आपका अनुसरण करने वाले ख़ुदा का सच्चा इलहाम पाते हैं।

फिर आयतल कुर्सी के अन्त में जो दो विशेषताएँ बयान की गईं हैं अल्लाह तआला की, अर्थात अलीय्युन- बड़ी बुलन्द शान वाला और उससे बुलन्द किसी की शान नहीं है, वही धरती और आकाश का स्वामी है तथा वह महानतम है। उसकी महानता एवं बड़ाई तथा उच्चतम शान का वह स्तर है जिस तक कोई नहीं पहुंच सकता। उसकी महानतम शान प्रत्येक वस्तु को घेरे में लिए हुए है तथा कोई चीज़ उसकी परिधि और प्रभुत्व से बाहर नहीं है। इस आयत के अन्तिम भाग की व्याख्या करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला की कुर्सी के बारे में यह आयत है कि- وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَالْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝ अर्थात- ख़ुदा की कुर्सी के भीतर सारी धरती एवं आकाश समाए हुए हैं तथा वह उन सबको उठाए हुए है, उनको उठाने से वह थकता नहीं तथा वह बड़ा उच्चतम है, कोई बुद्धि उसकी गहराई तक नहीं पहुंच सकती तथा वह अत्यधिक महान है, उसकी महानता के आगे सारी चीज़े तुच्छ हैं। यह है वर्णन कुर्सी का और यह केवल एक रूपक (संकेत) है जिसके द्वारा यह जतलाना मंज़ूर है कि धरती और आकाश सब ख़ुदा के आधीन हैं तथा इन सबसे उसका स्तर बड़ी दूर है तथा उसकी महानता का कोई छोर नहीं है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः यह विषय है जिसे हमें अपने सामने रखते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो प्रेरणा फ़रमाई है कि यह आयत पढ़े तो वह अल्लाह तआला की सुरक्षा में रहेगा तो आयतें केवल पढ़ना की काफ़ी नहीं है बल्कि इनके भावार्थ पर विचार करते हुए इन बातों को अपनाने की भी आवश्यकता है तथा समझने और यथार्थ को पाने की भी आवश्यकता है जो इन आयतों के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। यदि ये बातें होंगी तो फिर इंसान ख़ुदा तआला की कृपा से उसकी सुरक्षा में रहेगा। अल्लाह तआला हमें इसके अनुसार अपने जीवन व्यतीत करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने मुकर्रमा आबिदा बेगम साहिबा पत्नि अब्दुल क़ादिर डाहरी साहब के सद्गुणों का वर्णन फ़रमाते हुए जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

TOLL FREE NO: 180030102131